BSKC – 132

बी.ए. कार्यक्रम

(बी.ए.जी.)

सत्रीय कार्य (द्वितीय छमाही)

(जुलाई, 2019 एवं जनवरी, 2020 सत्रों के लिए)

BSKC – 132 संस्कृत गद्य–साहित्य

मानविकी विद्यापीठ
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
मैदान गढ़ी, नई दिल्ली – 110068

बी.ए. (कार्यक्रम) संस्कृत–कोर पाठ्यक्रम

सत्रीय कार्य (2019–20)

पाठ्यक्रम कोड : BAG/BSKC-132/2019–20

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है। सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जाएँगे।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें।

निर्देश :– सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िए :

1) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दायें सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनांक लिखिए।

2) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है :

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

दिनांक : .....

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ :

जुलाई 2019 सत्र के लिए : 30 अप्रैल 2020

जनवरी 2020 सत्र के लिए : 31 अक्टूबर 2020

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. **अध्ययन** : सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए। फिर इससे संबंधित इकाइयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए। अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ खास बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढंग से व्यवस्थित कीजिए।

2. **अभ्यास** : उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए। अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिंदु पर विस्तार से विचार कीजिए। निबंधात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरंभ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए। उत्तर के आरंभिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए। मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढंग से प्रस्तुत करें। उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढंग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियाँ न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें।

3. **प्रस्तुति :** जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ तो उसे साफ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए।

शुभकामनाओं के साथ।

नोट : याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

सत्रीय कार्य : BSKC- 132संस्कृत गद्य–साहित्य

पाठ्यक्रम कोड – BSKC-132
पाठ्यक्रम शीर्षक – संस्कृत गद्य–साहित्य
सत्रीय कार्य – BSKC – 132/TMA/2019-2020

पूर्णांक – 100

नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : –

(क) व्याख्या आधारित प्रश्न :–

1. अधोलिखित गद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए :– 20X2=40

(क) यथा यथा चेयं चपला दीप्यते तथा तथा दीपशिखेव कज्जलमलिनमेव कर्म केवलमुद्वमति। तथाहि। इयं संवर्धनवारिधारा तृष्णाविषवल्लीनाम् व्याधगीतिन्द्रियमृगाणाम्, परामर्शधूमलेखा सच्चरितचित्राणाम्, विभ्रमशय्या मोहदीर्घनिद्राणाम्, निवासजीर्णवलभी धनमदपिशाचिकानाम्, तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम्, पुरः पताका सर्वाविनयानाम्।

अथवा

अकालकुसुमप्रसवा इव मनोहरकृतयोऽपि लोकविनाशहेतवः, श्मशानाग्नय इव अतिरौद्रभूतयः, तैमिरिका इव अदूरदर्शिनः, उपसृष्टा इव क्षुद्राधिष्ठितभवनाः, श्रूयमाणा अपि प्रेतपटहा इवोद्वेजयन्ति, चिन्त्यमाना अपि महापातकाध्यवसाया इव उपद्रवमुपजनयन्ति, अनुदिवसमापूर्यमाणा पापेनेव आध्मातमूर्तयो भवन्ति, तदवस्थाश्च व्यसनशतशरव्यतामुपगताः वल्मीकतृणाग्रावस्थिताः जलबिन्दव इव पतितमप्यात्मानं नावगच्छन्ति।

(ख) ''भगवन्! श्रूयतां यदि कुतूहलम्। ह्यः सम्पादित–सायन्तन–कृत्ये, अत्रैव कुशाऽऽस्तरणमधिष्ठिते मयि, परितः समासीनेषु छात्रवर्गेषु, धीर–समीर–स्पर्शेन मन्दमन्दमान्दोल्यमानासु व्रततिषु, समुदिते यामिनी–कामिनी–चन्दनबिन्दौ इव इन्दौ, कौमुदी–कपटेन सुधाधारामिव वर्षति गगने, अस्मन्नीतिवार्ता शुश्रूषुषु इव मौनमाकलयत्सु–पतंग–कुलेषु, कैरव–विकाश–हर्ष–प्रकाश–मुखरेषु चञ्चरीकेषु, अस्पष्टाक्षरम्, कम्पमान–निःश्वासम्, श्लथत्कण्ठम्, घर्घरितस्वनम्, चीत्कारमात्रम्, दीनतामयम्, अत्यवधानश्रव्यत्वादनुमितदविष्ठतं क्रन्दनमश्रौषम्।

अथवा

दक्षिणदेशो हि पर्वतबहुलोऽस्ति, अरण्यानीसङ्कुलश्वास्तीति चिरोद्योगेनापि नायमशकन्महाराष्ट्रकेसरिणो हस्तयितुम्। साम्प्रतमस्यैवाऽऽत्मीयो दक्षिणदेशशासकत्वेन ''शास्तिखान''नामा प्रेष्यत इति श्रूयते। महाराष्ट्रदेशरत्नम्, यवनशोणितपिपासाऽऽकुलकृपाणः, वीरतासीमन्तिनीसीमन्तसुन्दरसान्द्रसिन्दूरदान देदीप्यमानदोर्दण्ड, मुकुटमणिमहाराष्ट्राणाम्, भूषणं भटानाम्, निधिर्नीतीनाम्, कुलभवनं कौशलानाम्, पारावारः परमोत्साहानाम्, कश्चन प्रातःस्मरणीयः, स्वधर्माऽऽग्रहग्रहग्रहिलः, शिव इव धृतावतारः शिववीरश्चास्मिन् पुण्यनगरान्नेदीयस्येव सिंहदुर्गे ससेनो निवसति। विजयपुराधीश्वरेण साम्प्रतमस्य प्रवृद्धं वैरम्। ''कार्यं वा साधयेयं देहं वा पातययेम्!'' इत्यस्य सारगर्भा महती प्रतिज्ञा।

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न :– 6X5=30

2. गद्यकाव्य के कितने भेद हैं? स्पष्ट कीजिए।

3. अम्बिकादत्त व्यास के जीवन–वृत्त एवं कर्तृत्व पर प्रकाश डालिए।

4. नीति एवं लोककथाओं का उद्‌भव और विकास किस प्रकार हुआ ? स्पष्ट कीजिए।

5. वेतालपंचविंशतिका के प्रतिपाद्य विषय पर टिप्पणी लिखिए।

6. शुकनासोपदेश में वर्णित सामाजिक और राजनीतिक विचारों पर टिप्पणी लिखिए।

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न : 15X2=30

7. बाणभट्ट के जीवन–वृत्त, कर्तृत्व एवं शैलीगत वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिए।

8. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पात्रों का चरित्र–चित्रण लिखिए :–

(क) चन्द्रापीड (ख) कादम्बरी

(ग) शिवाजी (घ) गौरसिंह